झाड़-फूँक

इस्लाम की रौशनी में

मौलाना सैयद अबुल-आला मौदूदी (रह॰)

संकलन एवं अनुवाद

नसीम ग़ाज़ी फ़लाही

विषय-सूची

बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त दयावान और कृपाशील है।

दो शब्द

यह छोटी-सी पुस्तिका अस्ल में मौलाना सैयद अबुल-आला मौदूदी (रह॰) का एक लेख है जो उन्होंने 'तफ़हीमुल-क़ुरआन' हिस्सा-6 में सूरा-113 अल-फ़लक़ और सूरा-114 अन-नास के परिचय में लिखा है।

तावीज़, झाड़-फूँक और इस तरह की दूसरी अमलियात (तंत्र-मंत्र) आज पूरे तौर से एक कारोबार का रूप ले चुकी हैं, जिनमें शिर्क के साथ-साथ तरह-तरह की बुराइयाँ पाई जाती हैं, जो बहरहाल मज़हबी और इनसानी दोनों दृष्टिकोणों से किसी भी समाज के लिए न सिर्फ़ ग़लत हैं, बल्कि नुक़सानदेह भी हैं।

होना तो यह चाहिए था कि इस तरह की अमलियात के बजाए लोगों के लिए सही तरीक़े पर इलाज और शिफ़ा का इन्तिज़ाम किया जाता और अल्लाह की क़ुदरत को लोगों के दिलो-दिमाग़ में बिठाने की कोशिश की जाती, मगर आज इसको एक कारोबार का रूप दे दिया गया है, जिसका मक़सद सिर्फ़ और सिर्फ़ दौलत हासिल करना होता है। इसका नतीजा यह हुआ कि क़दम-क़दम पर लोग तावीज़-गंडों और इस तरह की दूसरी अमलियात (तंत्र-मंत्र) की दुकानें खोलकर बैठ गए, जहाँ ग़रीबों, परेशान-हाल लोगों और मुसीबत के मारों की बीमारियों का इलाज और उनके ज़ख़्मों पर मरहम रखने के बजाए उनका ख़ून

चूसा जाने लगा और उनको तरह-तरह से ठगा जाने लगा। इसमें अस्पष्ट और न समझ में आनेवाले और अकसर शिर्कवाले काम और वज़ीफ़ों (दुआओं) को जगह दी गई, जिसे हम सभी जानते हैं। हैरत की बात यह है कि इस वक़्त मुसलमानों के साथ-साथ ग़ैर-मुस्लिम भाइयों की एक बड़ी तादाद भी इसपर न सिर्फ़ भरोसा और यक़ीन करती है, बल्कि सही जानकारी न होने की वजह से इस ठगी का शिकार बनी हुई है।

इस कारोबार के सिलसिले में मुस्लिम समाज के अन्दर बाहम एक-दूसरे के ख़िलाफ़ दो नज़रिए वुजूद में आए, एक ने पूरी तरह इसको ग़लत ठहराया जबकि दूसरे ने मुकम्मल तौर से बिना किसी झिझक के इसे क़बूल कर लिया। मौलाना मौदूदी (रह॰) का यह लेख इस सिलसिले में क़ुरआन और सुन्नत की रौशनी में एक मुनासिब और सन्तुलित नज़रिया पेश करता है, जिसमें न तो इस तरह की अमलियात का सिरे से इनकार है और न पूरी तरह इसे सही मान लिया गया है।

मौलाना मौदूदी (रह॰) ने इस लेख में क़ुरआन और हदीस की रौशनी में बहुत ही मज़बूत दलीलों के साथ इस बात को बयान किया है कि तावीज़ और इस तरह के दूसरे अमलियात शरीअत में जाइज़ हैं, शर्त यह है कि उनमें किसी तरह के शिर्क और शिर्कवाले अलफ़ाज़ और दुआओं का हल्का-सा असर भी न पाया जाता हो। इसी तरह वे इस बात को भी साफ़-साफ़ बयान करते हैं कि इस चीज़ को एक कारोबार बना लेना भी दुरुस्त नहीं है। इस सिलसिले में वे ज़ेहनों में पैदा होनेवाली उलझनों और सवालों का भी इत्मीनान-बख़्श जवाब देते हैं। मौलाना मरहूम के मुताबिक़ इसको अच्छे मक़सदों और अच्छी नीयत के साथ किया जा सकता है। इससे अल्लाह तआला पर तवक्कुल (भरोसा) और एतिमाद बढ़ता है।

इस लेख को पुस्तिका के रूप में प्रकाशित करते हुए हमें बहुत ख़ुशी हो रही है। इंशा-अल्लाह इस लेख के ज़रिए मुस्लिम समाज के लोगों और हमारे ग़ैर-मुस्लिम भाइयों के ज़ेहनों में झाड़-फूँक के सिलसिले में जो ग़लतफ़हमी पाई जाती है, वह दूर हो सकेगी। इस किताब में सुर्ख़ियाँ बाद में लगाई गई हैं, ताकि आम लोगों के लिए इससे फ़ायदा उठाना आसान हो सके।

अल्लाह तआला से दुआ है कि वह हमारी इस कोशिश को क़बूल फ़रमाए, आमीन!

— नसीम ग़ाज़ी फ़लाही

झाड़-फूँक
इस्लाम की रौशनी में

यह सवाल बार-बार सामने आता है कि क्या झाड़-फूँक की इस्लाम में कोई गुंजाइश है? और यह कि झाड़-फूँक अपने आप में असर भी रखता है या नहीं? यह सवाल इसलिए सामने आता है कि बहुत-सी हदीसों में यह ज़िक्र आया है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) हर रात को सोते वक़्त और ख़ास तौर पर बीमारी की हालत में मुअव्विज़तैन (सूरा फ़लक़ और सूरा नास), या कुछ रिवायतों के मुताबिक़ मुअव्विज़ात (यानी सूरा इख़लास और मुअव्विज़तैन) तीन बार पढ़कर अपने दोनों हाथों में फूँकते और सिर से लेकर पाँव तक पूरे जिस्म पर, जहाँ-जहाँ तक भी आप (सल्ल०) के हाथ पहुँच सकते, उन्हें फेरते थे। आख़िरी बीमारी में जब आप (सल्ल०) के लिए ख़ुद ऐसा करना मुमकिन न रहा तो (आप सल्ल० की बीवी) हज़रत आइशा (रज़ि०) ने ये सूरतें (अपने तौर पर या आप सल्ल० के हुक्म से) पढ़ीं और आपके मुबारक हाथों की बरकत के ख़याल से आप ही के हाथ लेकर आप (सल्ल०) के जिस्म पर फेरे। इस सिलसिले की रिवायतें सही सनदों के साथ बुख़ारी, मुस्लिम, नसई, इब्ने-माजा, अबू-दाऊद और मुवत्ता इमाम मालिक में ख़ुद हज़रत आइशा (रज़ि०) से बयान हुई हैं, जिनसे बढ़कर कोई भी नबी (सल्ल०) की घरेलू ज़िन्दगी के बारे में नहीं जान सकता था।

बुनियादी मसला

इस मामले में पहले शरई मसला अच्छी तरह समझ लेना चाहिए। हदीसों में हज़रत अब्दुल्लाह-बिन-अब्बास (रज़ि॰) की एक लम्बी रिवायत आई है, जिसके आख़िर में नबी (सल्ल॰) फ़रमाते हैं कि "मेरी उम्मत के वे लोग बिना हिसाब के जन्नत में दाख़िल होंगे जो न दाग़ने का इलाज कराते हैं, न झाड़-फूँक कराते हैं, न फ़ाल लेते हैं, बल्कि अपने रब पर भरोसा करते हैं।" (हदीस : मुस्लिम)

हज़रत मुग़ीरा-बिन-शोबा (रज़ि॰) की रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया, "जिसने दाग़ने से इलाज कराया और झाड़-फूँक कराई उसने अल्लाह पर भरोसा नहीं किया।" (हदीस : तिरमिज़ी)

हज़रत अब्दुल्लाह-बिन-मसऊद (रज़ि॰) की रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) दस चीज़ों को नापसन्द करते थे, जिनमें से एक झाड़-फूँक भी है, सिवाए मुअव्विज़तैन या मुअव्विज़ात के।"

(हदीसः अबू-दाऊद, अहमद, नसई, इब्ने-हिब्बान, हाकिम)

कुछ हदीसों से यह भी मालूम होता है कि शुरू में नबी (सल्ल॰) ने झाड़-फूँक से बिलकुल मना कर दिया था लेकिन बाद में इस शर्त के साथ इसकी इजाज़त दे दी कि इसमें शिर्क न हो। अल्लाह के पाक नामों या उसके कलाम से झाड़ा जाए, कलाम ऐसा हो जो समझ में आए और यह मालूम किया जा सके कि उसमें कोई गुनाह की चीज़ नहीं है, और भरोसा झाड़-फूँक पर न किया जाए कि वह अपनी जगह ख़ुद शिफ़ा (फ़ायदा) देनेवाली है, बल्कि अल्लाह पर भरोसा किया जाए कि वह चाहेगा तो उसे फ़ायदेमन्द बना देगा।

हदीसों की रौशनी में

यह शरई मसला साफ़-साफ़ मालूम हो जाने के बाद अब देखिए कि हदीसें इस बारे में क्या कहती हैं —

तबरानी ने 'अल-जामिउस-सग़ीर' में हज़रत अली (रज़ि॰) की रिवायत नक़्ल की है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) को एक बार नमाज़ की हालत में बिच्छू ने काट लिया। जब आप (सल्ल॰) नमाज़ पढ़ चुके तो फ़रमाया, "बिच्छू पर ख़ुदा की लानत, यह न किसी नमाज़ी को छोड़ता है न किसी और को।" फिर पानी और नमक मँगवाया और जहाँ बिच्छू ने काटा था, वहाँ आप नमकीन पानी मलते जाते थे और सूरा काफ़िरून, सूरा इख़लास, सूरा फ़लक़ और सूरा नास पढ़ते जाते थे।

हज़रत इब्ने-अब्बास (रज़ि॰) की यह रिवायत भी हदीसों की किताबों में आई है कि नबी (सल्ल॰) हज़रत हसन और हज़रत हुसैन (रज़ि॰) पर यह दुआ पढ़ते थे –

أُعِيذُكُمَا بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّةِ مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ وَّهَامَّةٍ وَّمِنْ كُلِّ عَيْنٍ لَّامَّةٍ ۝

उईज़ुकुमा बि-कलिमातिल-लाहित-ताम्मति मिन् कुल्लि शैतानिंव-व हाम्मतिंव-वमिन् कुल्लि ऐनिल-लाम्मह।

"मैं तुम (दोनों) को अल्लाह के बे-ऐब कलिमात की पनाह में देता हूँ, हर शैतान और तकलीफ़ देनेवाली चीज़ से और हर बुरी नज़र से।" (हदीस : बुख़ारी, अहमद, तिरमिज़ी, इब्ने-माजा)

उसमान-बिन-अबिल-आस सक़फ़ी के बारे में मुस्लिम, मुवत्ता, तबरानी और हाकिम में थोड़े लफ़्ज़ी फ़र्क़ के साथ यह रिवायत आई है कि उन्होंने अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) से शिकायत की कि मैं जब से मुसलमान हुआ हूँ, मुझे एक दर्द महसूस होता है, जो मुझे मारे डालता है। आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया, अपना दाहिना हाथ उस जगह पर रखो जहाँ दर्द होता है, फिर तीन बार 'बिसमिल्लाह' (بِسْمِ الله) कहो और सात बार यह कहते हुए हाथ फेरो कि :

أَعُوذُ بِاللّٰهِ وَقُدْرَتِهٖ مِنْ شَرِّ مَا أَجِدُ وَأُحَاذِرُ۝

अऊज़ु बिल्लाहि व क़ुद्‌रतिही मिन् शर्रि मा अजिदु व उहाज़िर।

"मैं अल्लाह और उसकी क़ुदरत की पनाह माँगता हूँ, उस चीज़ की बुराई से जिसको मैं महसूस करता हूँ और जिसके लग जाने का मुझे डर है।"

मुवत्ता में इसके साथ इसपर यह इज़ाफ़ा है कि उसमान-बिन-अबिल-आस (रज़ि०) ने कहा कि इसके बाद मेरा वह दर्द जाता रहा, और इसी चीज़ की तालीम मैं अपने घरवालों को देता हूँ।

मुसनद अहमद और तहावी में तलक़-बिन-अली (रज़ि०) की रिवायत है कि मुझे अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की मौजूदगी में बिच्छू ने काट लिया। रसूल (सल्ल०) ने मुझपर पढ़कर फूँका और उस जगह पर हाथ फेरा।

मुस्लिम में अबू-सईद ख़ुदरी (रज़ि०) की रिवायत है कि एक बार नबी (सल्ल०) बीमार हुए तो (फ़रिश्ते) जिबरील (अलैहि०) ने आकर पूछा, "ऐ मुहम्मद, क्या आप बीमार हो गए।" आप (सल्ल०) ने फ़रमाया। "हाँ।" उन्होंने कहा—

بِسْمِ اللّٰهِ أَرْقِيْكَ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ يُّؤْذِيْكَ مِنْ شَرِّ كُلِّ نَفْسٍ عَنْ عَيْنٍ حَاسِدٍ، اَللّٰهُمَّ يَشْفِيْكَ بِسْمِ اللّٰهِ أَرْقِيْكَ۝

बिसमिल्लाहि अर.की-क मिन् कुल्लि शैईं-युअ्ज़ी-क मिन् शर्रि-कुल्लि-नफ़्सिन् अन ऐनिन् हासिदिन, अल्लाहुम-म यशफ़ी-क बिसमिल्लाहि अरक़ीक।

"मैं अल्लाह के नाम पर आपको झाड़ता हूँ, हर उस चीज़ से जो आपको तकलीफ़ दे और हर जानदार और हसद (ईर्ष्या) करनेवाले की नज़र की बुराई से, अल्लाह आपको शिफ़ा दे, मैं अल्लाह के नाम पर आपको झाड़ता हूँ।"

इससे मिलती-जुलती रिवायत मुसनद अहमद में हज़रत उबादा-बिन-सामित (रज़ि॰) से बयान हुई है कि नबी (सल्ल॰) बीमार थे। मैं बीमारपुरसी के लिए गया तो आप (सल्ल॰) को सख़्त तकलीफ़ में पाया। शाम को गया तो देखा कि आप (सल्ल॰) बिलकुल तन्दुरुस्त थे। मैंने इतनी जल्दी तन्दुरुस्त हो जाने की वजह पूछी तो फ़रमाया कि जिबरील (अलैहि॰) आए थे और उन्होंने मुझे कुछ कलिमात से झाड़ा। फिर आप (सल्ल॰) ने क़रीब-क़रीब उसी तरह के अलफ़ाज़ उनको सुनाए जो ऊपरवाली हदीस में नक़्ल किए गए हैं। हज़रत आइशा (रज़ि॰) से भी मुस्लिम और मुसनद अहमद में ऐसी ही रिवायतें नक़्ल की गई हैं।

इमाम अहमद (रह॰) ने अपनी मुसनद में उम्मुल-मोमिनीन हज़रत हफ़सा (रज़ि॰) की रिवायत नक़्ल की है कि एक दिन नबी (सल्ल॰) मेरे यहाँ आए और मेरे पास शिफ़ा[1] नाम की एक औरत बैठी थीं, जो 'नमला' (दिदोड़ा) को झाड़ा करती थीं। नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया, "हफ़सा को भी वह अमल सिखा दो।" ख़ुद शिफ़ा-बिन्ते-अब्दुल्लाह की यह रिवायत इमाम अहमद, अबू-दाऊद और नसई ने नक़्ल की है कि नबी (सल्ल॰) ने मुझसे फ़रमाया कि "तुमने हफ़सा को जिस तरह लिखना-पढ़ना सिखाया है, 'नमला' का झाड़ना भी सिखा दो।"

सहीह मुस्लिम में औफ़-बिन-मालिक अशजई की रिवायत है कि जाहिलियत के ज़माने में हम लोग झाड़-फूँक किया करते थे। हमने

---

[1] इनका अस्ल नाम लैला था, मगर शिफ़ा-बिन्ते-अब्दुल्लाह के नाम से मशहूर थीं। हिजरत से पहले ईमान लाईं। क़ुरैश के ख़ानदान बनू-अदी से इनका ताल्लुक़ था। यह वही ख़ानदान है, जिसके एक सदस्य हज़रत उमर (रज़ि॰) थे। इस तरह यह हज़रत हफ़सा (रज़ि॰) की रिश्तेदार होती थीं।

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से पूछा कि इस मामले में आपकी क्या राए है? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जिन चीज़ों से तुम झाड़ते थे, वे मेरे सामने पेश करो, झाड़ने में कोई हरज नहीं है, जब तक उसमें शिर्क न हो।"

मुस्लिम, मुसनद अहमद और इब्ने-माजा में हज़रत जाबिर-बिन-अब्दुल्लाह (रज़ि०) की रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने झाड़-फूँक से रोक दिया था। फिर हज़रत अम्र-बिन-हज़्म के ख़ानदान के लोग आए और कहा कि हमारे पास एक अमल था जिससे हम बिच्छू (या साँप) के काटे को झाड़ते थे, मगर आपने इस काम से मना कर दिया है। फिर उन्होंने वह चीज़ आप (सल्ल०) को सुनाई जो वे पढ़ते थे। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "इसमें तो कोई हरज मैं नहीं पाता, तुममें से जो शख़्स अपने किसी भाई को फ़ायदा पहुँचा सकता है वह ज़रूर पहुँचाए।" मुस्लिम की एक दूसरी हदीस में जाबिर-बिन-अब्दुल्लाह (रज़ि०) की रिवायत है कि आले-हज़्म के पास साँप के काटे का अमल था, और नबी (सल्ल०) ने उनको इसकी इजाज़त दे दी। इसकी ताईद मुस्लिम, मुसनद अहमद और इब्ने-माजा में हज़रत आइशा (रज़ि०) की यह रिवायत भी करती है कि नबी (सल्ल०) ने अनसार के एक ख़ानदान को हर ज़हरीले जानवर के काटे को झाड़ने की इजाज़त दी थी। मुसनद अहमद, तिरमिज़ी, मुस्लिम और इब्ने-माजा में हज़रत अनस (रज़ि०) से भी इससे मिलती-जुलती रिवायतें मिलती हैं, जिनमें नबी (सल्ल०) ने ज़हरीले जानवरों के काटे और दिदोड़ा के रोग और बुरी नज़र के झाड़ने की इजाज़त दी।

मुसनद अहमद, तिरमिज़ी, इब्ने-माजा और हाकिम ने हज़रत उमैर-मौला-अबिल-लहम से यह रिवायत नक़्ल की है कि जाहिलियत के

ज़माने में मेरे पास एक अमल था जिससे मैं झाड़ा करता था। मैंने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के सामने उसे पेश किया। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि फ़ुलाँ-फ़ुलाँ चीज़ें इसमें से निकाल दो, बाक़ी से तुम झाड़ सकते हो।

मुवत्ता इमाम मालिक में है कि हज़रत अबू-बक्र (रज़ि०) अपनी बेटी हज़रत आइशा (रज़ि०) के घर तशरीफ़ ले गए तो देखा कि वे बीमार हैं और एक यहूदी औरत उनको झाड़ रही है। इसपर उन्होंने फ़रमाया कि अल्लाह की किताब पढ़कर झाड़ो। इससे मालूम हुआ कि अहले-किताब (यहूदी और ईसाई) अगर तौरात या इंजील की आयतें पढ़कर झाड़ें तब भी यह जाइज़ है।

एक ज़रूरी बात

रहा यह सवाल कि क्या झाड़-फूँक फ़ायदेमन्द भी है या नहीं, तो इसका जवाब यह है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने दवा और इलाज से न सिर्फ़ यह कि कभी मना नहीं किया, बल्कि ख़ुद फ़रमाया कि हर बीमारी की दवा अल्लाह तआला ने पैदा की है, और तुम लोग दवा किया करो। नबी (सल्ल०) ने ख़ुद लोगों को कुछ बीमारियों के इलाज बताए हैं, जैसा कि हदीसों में 'किताबुत-तिब्ब' (दवा-इलाज के बारे में बतानेवाली किताब) को देखने से मालूम हो सकता है। लेकिन दवा भी अल्लाह ही के हुक्म और इजाज़त से फ़ायदा पहुँचानेवाली होती है, वरना अगर दवा और डॉक्टरी इलाज हर हाल में फ़ायदेमन्द होता तो अस्पतालों में कोई न मरता। अब अगर दवा और इलाज करने के साथ अल्लाह के कलाम और उसके 'अस्माए-हुस्ना' (अच्छे और पाक नामों) से भी फ़ायदा उठाया जाए या ऐसी जगह जहाँ कोई डॉक्टरी मदद

मयस्सर न हो वहाँ अल्लाह ही की तरफ़ रुजूअ् करके उसके कलाम और उसके नामों और गुणों से मदद ली जाए तो यह माद्दापरस्तों (भौतिकवादियों) के सिवा किसी की अक़्ल के भी ख़िलाफ़ नहीं है।[1]

अमलियात का कारोबार

अलबत्ता यह सही नहीं है कि दवा और इलाज को, जहाँ वह मयस्सर हो, जान-बूझकर छोड़ दिया जाए, और सिर्फ़ झाड़-फूँक से काम लेने ही को काफ़ी समझा जाए। यह भी सही नहीं है कि कुछ लोग अमलियात और तावीज़-गंडों के क्लीनिक खोलकर बैठ जाएँ और इसी को कमाई का ज़रिआ बना लें।

इस मामले में बहुत-से लोग हज़रत अबू-सईद ख़ुदरी (रज़ि॰) की उस रिवायत को दलील के तौर पर पेश करते हैं जो बुख़ारी, मुस्लिम, तिरमिज़ी, मुसनद अहमद, अबू-दाऊद और इब्ने-माजा में नक़्ल की गई है और इसकी ताईद बुख़ारी में इब्ने-अब्बास (रज़ि॰) की भी एक

---

[1] माद्दापरस्त दुनिया के भी बहुत-से डॉक्टरों ने इस बात को माना है कि दुआ और अल्लाह की तरफ़ रुजूअ् होना रोगियों के इलाज में बहुत फ़ायदेमन्द चीज़ है। और इसका ख़ुद मुझे निजी तौर पर अपनी ज़िन्दगी में दो बार तजरबा हुआ है। 1948 ई॰ में जब मुझे क़ैद किया गया तो कुछ दिनों बाद एक पथरी मेरे मूत्राशय में आकर अड़ गई, और 16 घंटे तक पेशाब बन्द रहा। मैंने अल्लाह तआला से दुआ की कि मैं ज़ालिमों से इलाज की दरख़ास्त नहीं करना चाहता, तू ही मेरा इलाज फ़रमा दे। चुनाँचे वह पथरी पेशाब के रास्ते से हट गई और 20 वर्ष तक हटी रही, यहाँ तक कि 1968 ई॰ में उसने फिर तकलीफ़ दी और उसको आपरेशन करके निकाला गया। दूसरी बार जब 1953 ई॰ में मुझे गिरफ़्तार किया गया तो मेरी दोनों पिंडलियाँ कई महीने से दाद की सख़्त तकलीफ़ में मुब्तला थीं, और किसी इलाज से आराम नहीं आ रहा था। गिरफ़्तारी के बाद मैंने अल्लाह तआला से फिर वही दुआ की जो 1948 ई. में की थी और किसी दवा-इलाज के बग़ैर पिंडलियाँ दाद से बिलकुल साफ़ हो गईं। आज तक फिर कभी वह बीमारी मुझे नहीं हुई।

रिवायत करती है। उसमें यह बयान हुआ है कि नबी (सल्ल॰) ने एक मुहिम पर अपने कुछ सहाबा (रज़ि॰) को भेजा जिनमें हज़रत अबू-सईद ख़ुदरी (रज़ि॰) भी थे। ये लोग रास्ते में अरब के एक क़बीले की बस्ती पर जाकर ठहरे और उन्होंने क़बीलेवालों से कहा कि हमारी मेज़बानी करो। उन्होंने इनकार कर दिया। इतने में क़बीले के सरदार को बिच्छू ने काट लिया और वे लोग इन मुसाफ़िरों के पास आए और कहा कि तुम्हारे पास कोई दवा या अमल है जिससे तुम हमारे सरदार का इलाज कर दो? हज़रत अबू-सईद ख़ुदरी (रज़ि॰) ने कहा, "है तो सही, मगर चूँकि तुमने हमारी मेज़बानी से इनकार किया है, इसलिए जब तक तुम कुछ देना तय न करो, हम इसका इलाज नहीं करेंगे।" उन्होंने बकरियों का एक रेवड़ (कुछ रिवायतों में है कि 30 बकरियाँ) देने का वादा किया और हज़रत अबू-सईद ख़ुदरी (रज़ि॰) ने जाकर उसपर सूरा-फ़ातिहा पढ़नी शुरू की और मुँह का लुआब (थूक) उसपर मलते गए।[1] आख़िरकार बिच्छू का असर ख़त्म हो गया और क़बीलेवालों ने जितनी बकरियाँ देने का वादा किया था वे लाकर दे दीं। मगर उन लोगों ने आपस में कहा कि इन बकरियों से कोई फ़ायदा न उठाओ जब तक अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) से पूछ न लिया जाए। न जाने इस काम पर मेहनताना लेना जाइज़ है या नहीं। चुनाँचे ये लोग नबी (सल्ल॰) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और माजरा कह सुनाया। नबी (सल्ल॰) ने हँसकर फ़रमाया, "तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि यह सूरा (फ़ातिहा) झाड़ने के काम भी आ सकती है? बकरियाँ ले लो और उनमें मेरा हिस्सा भी लगाओ।"

---

[1] अकसर रिवायतों में यह नहीं बताया गया है कि यह अमल करनेवाले हज़रत अबू-सईद ख़ुदरी (रज़ि॰) थे। बल्कि उनमें यह भी नहीं बताया गया है कि हज़रत अबू-सईद ख़ुदरी (रज़ि॰) ख़ुद भी इस मुहिम में शरीक थे। लेकिन तिरमिज़ी की रिवायत में दोनों बातें साफ़ तौर से बयान हुई हैं।

लेकिन इस हदीस से तावीज़-गंडों और झाड़-फूँक के क्लीनिक चलाने को जाइज़ ठहराने से पहले अरब के उन हालात को निगाह में रखना चाहिए, जिनमें हज़रत अबू-सईद ख़ुदरी (रज़ि॰) ने यह काम किया था और नबी (सल्ल॰) ने उसे न सिर्फ़ जाइज़ रखा था बल्कि यह भी फ़रमाया था कि मेरा हिस्सा भी लगाओ, ताकि इसके जाइज़ होने या न होने के मामले में उन सहाबा (रज़ि॰) के दिलों में कोई शक बाक़ी न रहे। अरब के हालात उस ज़माने में भी ये थे और आज तक ये हैं कि पचास-पचास, सौ-सौ, डेढ़-डेढ़ सौ मील तक आदमी को एक बस्ती से चलकर दूसरी बस्ती नहीं मिलती। बस्तियाँ भी उस वक़्त ऐसी न थीं जिनमें होटल, सराए या खाने की दुकानें मौजूद हों और मुसाफ़िर कई-कई दिनों का सफ़र तय करके जब वहाँ पहुँचे तो खाने-पीने का सामान ख़रीद सके। इन हालात में यह बात अरब के आम अख़लाक़ी उसूलों में शामिल थी कि मुसाफ़िर जब किसी बस्ती पर पहुँचें तो बस्ती के लोग उनकी मेज़बानी करें। इससे इनकार का मतलब कई बार मुसाफ़िरों के लिए मौत होता था और अरब में इस रवैये को बुरा समझा जाता था। इसी लिए अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने अपने सहाबा (रज़ि॰) के इस काम को जाइज़ रखा कि जब क़बीलेवालों ने मेज़बानी से इनकार कर दिया था तो उनके सरदार का इलाज करने से उन्होंने भी इनकार कर दिया और इस शर्त पर उसका इलाज करने पर राज़ी हुए कि वे उनको कुछ देना तय करें। फिर जब उनमें से एक साहब ने अल्लाह के भरोसे पर सूरा फ़ातिहा उस सरदार पर पढ़ी और वह उससे अच्छा हो गया तो तय किया हुआ मेहनताना क़बीलेवालों ने लाकर दे दिया और नबी (सल्ल॰) ने इस मेहनताने के लेने को हलाल और पाक-साफ़ क़रार दिया। बुख़ारी में इस वाक़िए के बारे में हज़रत

अब्दुल्लाह-बिन-अब्बास (रज़ि॰) की जो रिवायत है, उसमें नबी (सल्ल॰) के अलफ़ाज़ ये हैं —

> "बजाए इसके कि तुम कोई और अमल करते, तुम्हारे लिए यह ज़्यादा सही बात थी कि तुमने अल्लाह की किताब पढ़कर उसपर मेहनताना लिया।"

यह नबी (सल्ल॰) ने इसलिए फ़रमाया कि दूसरे तमाम अमलियात से अल्लाह का कलाम बढ़कर है, इसके अलावा इस तरह अरब के उस क़बीले पर हक़ (इस्लाम) की तबलीग़ का हक़ भी अदा हो गया कि उन्हें उस कलाम की बरकत मालूम हो गई जो अल्लाह की तरफ़ से नबी (सल्ल॰) लाए हैं। इस वाक़िए को उन लोगों के लिए मिसाल क़रार नहीं दिया जा सकता जो शहरों और क़स्बों में बैठकर झाड़-फूँक के क्लीनिक चलाते हैं और इसी को उन्होंने रोज़ी का ज़रिआ बना रखा है। इसकी कोई मिसाल नबी करीम (सल्ल॰) या सहाबा (रज़ि॰) और पिछले उलमा के यहाँ नहीं मिलती।

(तफ़हीमुल-क़ुरआन (उर्दू), हिस्सा-6, पृ॰ 557-562)

झाड़-फूँक की कुछ क़ुरआनी दुआएँ

● संकलनकर्ता

أَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۞

अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम।

"मैं शैतान मरदूद से बचने के लिए अल्लाह की पनाह में आता हूँ।"

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۞

बिसमिल्ला-हिर्रहमा-निर्रहीम।

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान और रहमवाला है।

सूरा-1 फ़ातिहा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝١ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝٢ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۝٣ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۝٤ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۝٥ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۝٧ آمين

अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल-आलमीन। अर्रहमानिर्रहीम। मालिकि यौमिद्दीन। इय्या-क नअ्बुदु व इय्या-क नस्तईन। इह्दिनस-सिरातल-मुस्तक़ीम। सिरातल्लज़ी-न अन्अम-त अलैहिम, ग़ैरिल-मग़्ज़ूबि अलैहिम व लज़्ज़ाल्लीन। आमीन!

"शुक्र और तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है जो सारे जहानों का रब है। बहुत मेहरबान, बड़ा रहमवाला है। बदले के दिन का मालिक है। हम तेरी ही बन्दगी करते हैं और तुझी से मदद माँगते हैं। हमें सीधी राह चला। उन लोगों की राह जिनपर तूने नवाज़िश की। जिनपर तेरा ग़ज़ब नहीं हुआ, और जो भटके हुए नहीं हैं।" आमीन! (ऐ ख़ुदा! यह दुआ क़बूल फ़रमा!)

सूरा-109 काफ़िरून

قُلْ يَاأَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۝١ لَآ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۝٢ وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۝٣ وَلَآ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۝٤ وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۝٥ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ۝٦

क़ुल् या अय्युहल्-काफ़िरून। ला अअ्‌बुदु मा तअ्‌बुदून। व ला अन्तुम् आबिदू-न मा अअ्‌बुद। व ला अ-ना आबिदुम्-मा अबत्तुम्। व ला अन्तुम् आबिदू-न मा अअ्‌बुद। लकुम् दीनुकुम् व लि-य दीन।

"कहो ऐ इनकार करनेवालो, मैं उनकी इबादत नहीं करता जिनकी इबादत तुम करते हो। और न तुम उसकी इबादत करनेवाले हो जिसकी इबादत मैं करता हूँ। और न मैं उनकी इबादत करनेवाला हूँ जिनकी इबादत तुमने की है और न तुम उसकी इबादत करनेवाले हो जिसकी इबादत मैं करता हूँ। तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन और मेरे लिए मेरा दीन।"

सूरा-112 इख़्लास

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝١ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝٢ لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۝٣ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝٤

क़ुल् हुवल्लाहु अ-हद्। अल्लाहुस्-समद्। लम् यलिद् व लम् यूलद्। व लम् यकुल्-लहू कुफ़ुवन् अ-हद्।

"कहो, वह अल्लाह है अकेला (उस जैसा कोई और नहीं)। अल्लाह किसी का मुहताज नहीं (और सब उसके मुहताज हैं)। उसके कोई औलाद नहीं। न वह किसी की औलाद है। और उस जैसा कोई नहीं।"

सूरा-113 फ़लक़

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ① مِن شَرِّ مَا خَلَقَ ② وَمِن شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ③
وَمِن شَرِّ النَّفَّاثَاتِ فِي الْعُقَدِ ④ وَمِن شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ⑤

क़ुल् अऊज़ु बिरब्बिल्-फ़-लक़। मिन् शर्रि मा ख़-ल-क़। व मिन् शर्रि ग़ासिक़िन् इज़ा व-क़ब्। व मिन् शर्रिन्-नफ़्फ़ासाति फ़िल्-उ-क़द्। व मिन् शर्रि-हासिदिन् इज़ा ह-सद्।

"कहो, मैं पनाह माँगता हूँ सुबह के रब की, हर उस चीज़ की बुराई से जो उसने पैदा की, और रात के अंधेरे की बुराई से जबकि वह छा जाए, और गिरहों में फूँकनेवालों (या फूँकनेवालियों) की बुराई से, और हसद (ईर्ष्या) करनेवाले की बुराई से जबकि वह हसद करे।"

सूरा-114 नास

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ ① مَلِكِ النَّاسِ ② إِلَٰهِ النَّاسِ ③ مِن شَرِّ الْوَسْوَاسِ
الْخَنَّاسِ ④ الَّذِي يُوَسْوِسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ ⑤ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ⑥

क़ुल् अऊज़ु बिरब्बिन्नास। मलिकिन्नास। इलाहिन्नास। मिन् शर्रिल्-वस्वासिल्-ख़न्नास। अल्लज़ी युवस्विसु फ़ी सुदूरिन्नास। मिनल्-जिन्नति वन्नास।

"कहो, मैं पनाह माँगता हूँ इनसानों के रब, इनसानों के बादशाह, इनसानों के हक़ीक़ी माबूद की उस वसवसे डालनेवाले की बुराई से जो बार-बार पलटकर आता है, जो लोगों के दिलों में वसवसे डालता है चाहे वह जिन्नों में से हो या इनसानों में से।"

झाड़-फूँक की कुछ अन्य दुआएँ

हज़रत आइशा (रज़ि॰) फ़रमाती हैं कि नबी (सल्ल॰) के घरवालों में से जब कोई तकलीफ़ या दर्द में मुब्तला हो जाता तो आप (सल्ल॰) यह दुआ पढ़कर अपना दाहिना हाथ उसके जिस्म पर फेरते—

اَللّٰهُمَّ رَبَّ النَّاسِ، أَذْهِبِ الْبَأْسَ، وَاشْفِ، أَنْتَ الشَّافِيْ، لَا شِفَاءَ إِلاَّ شِفَاؤُكَ شِفَاءً لَا يُغَادِرُ سَقَماً۔

अल्लाहुम-म रब्बन-नासि अज़्हिबिल बअ्-स वशफ़ि अन्तश्शाफ़ी ला शिफ़ा-अ इल्ला शिफ़ाउ-क शिफ़ाअन् ला युग़ादिरु स-क़-मा

"ऐ अल्लाह! इनसानों के परवरदिगार, तकलीफ़ दूर फ़रमा और सेहत दे। तू ही शिफ़ा (बीमारी से नजात) देनेवाला है, तेरी शिफ़ा के सिवा कोई शिफ़ा नहीं। ऐसी शिफ़ा दे जो बीमारी का नामो-निशान न छोड़े।" (हदीस : बुख़ारी, मुस्लिम)

हज़रत इब्ने-अब्बास (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया, "जो किसी ऐसे बीमार की बीमारपुरसी को जाए जिसपर मौत के आसार (लक्षण) ज़ाहिर न हुए हों तो अगर वह उसके पास सात बार यह दुआ पढ़ेगा तो अल्लाह तआला उसे तन्दुरुस्त कर देगा—

أَسْئَلُ اللّٰهَ الْعَظِيْمَ، رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ أَنْ يَّشْفِيَكَ وَيُعَافِيَكَ۔

असअलुल्लाहल-अज़ी-म रब्बल-अरशिल-अज़ीमि अँय-यशफ़ि-य-क व युआफ़ि-य-क

"मैं बड़ाईवाले ख़ुदा और बड़े अर्श के रब से दरख़ास्त करता हूँ कि वह तुझे शिफ़ा (बीमारी से नजात) दे और आफ़ियत (अम्न व सुकून) दे।" (हदीस : तिरमिज़ी)

हज़रत अबू-दरदा (रज़ि॰) फ़रमाते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) को यह कहते हुए सुना कि तुमको या तुम्हारे किसी भाई को अगर कोई शिकायत हो जाए तो यह दुआ पढ़े—

رَبَّنَا اللّٰهُ الَّذِیْ فِی السَّمَاءِ تَقَدَّسَ اسْمُكَ، اَمْرُكَ فِی السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ كَمَا رَحْمَتُكَ فِی السَّمَاءِ فَاجْعَلْ رَحْمَتَكَ فِی الْاَرْضِ، وَاغْفِرْلَنَا حُوْبَنَا وَ خَطَايَانَا، أَنْتَ رَبُّ الطَّيِّبِيْنَ، فَأَنْزِلْ رَحْمَةً مِّنْ رَّحْمَتِكَ وَشِفَاءً مِّنْ شِفَائِكَ عَلٰى هٰذَا الْوَجْعِ۔

रब्बनल्लाहुल्लज़ी फ़िस्समाइ तक़द्दसस-मु-क अमरु-क फ़िस्समाइ वल अरज़ि कमा रहमतु-क फ़िस्समाइ फ़जअल रहमत-क फ़िल-अरज़ि वग़फ़िर लना हू-बना व-ख़तायाना अन-त रब्बुत्तय्यिबी-न फ़ अंज़िल रह-मतम-मिर-रहममित-क व शिफ़ाअम-मिन् शिफ़ाइ-क अला हाज़ल वजइ।

"हमारा परवरदिगार अल्लाह जो आसमान में है, ऐ अल्लाह! तेरा नाम पाक है, तेरा हुक्म आसमान और ज़मीन पर जारी है। जिस तरह आसमान में तेरी रहमत नाज़िल होती है, ज़मीन पर भी अपनी रहमत नाज़िल कर। हमारी भूलें और ग़लतियाँ माफ़ कर दे। तू पाक इनसानों का रब है, तो तू अपनी रहमत और शिफ़ा के ख़ज़ाने से इस दर्द पर अपनी रहमत और शिफ़ा नाज़िल फ़रमा।"

(हदीस : अबू-दाऊद, नसई, हाकिम)

•□•□•